International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(III), January - March, 2023, pp. 201-203

पश्चिमी राजस्थान में सूखा एवं अकाल की समस्या और उसका प्रबन्ध

डॉ. विक्रम सिंह*

प्रस्तावना

विश्व की बढ़ती आबादी एवं आर्थिक विकास की तीव्र दर के कारण जल की मांग निरन्तर बढती जा रही है। जलापूर्ति के स्त्रोत इस बढ़ती मांग के अनुरूप किस प्रकार पूर्ति कर सकेगें यह एक गंभीर प्रश्न है। जल समस्या की महत्ता के कारण बुद्धिजीवियों, शिक्षाविद्ों एवं नीति निर्माताओं का ध्यान विगत दो दशकों से इस ओर आकृष्ट हुआ है । फलस्वरूप जल प्रबन्धन की बेहतर तकनीकी विकसित करने की दिशा में प्रयास प्रारम्भ हुआ है।

पर्यावरण भूगोल वेत्ताओं के शोध एवं अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र रहा है। मानव एवं पर्यावरण के अवगुंठित अर्न्तसम्बन्ध के कारण पर्यावरण विषयक दृष्टिकोण के समय के साथ व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

जल जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं में से एक है वर्षा जल का वह महत्वपूर्ण भाग है जिसमें स्थलमण्डल को प्राकृतिक रूप से पानी प्राप्त होता है यह न केवल भू–पृष्ठीय जल का प्रमुख स्त्रोत है वरन भूमिगत जल की मात्रा भी वर्षा से निर्धारित होती है। इस प्रकार का जल पीने योग्य पानी के रूप में जीव जगत का आधार होता है वही कृषि एवं अन्य विकास भी इससे सम्बन्धित रहता है। प्राचीनकाल से ही मानव सभ्यता का विकास जल की उपलब्धता से प्रभावित रहा है।

सूखा एवं अकाल किसी निश्चित क्षेत्र में जब वर्षा कम होती है या नही होती है तब अपना प्रभाव दिखाते है। हालांकि कारण कोई भी हो सकता है जैसे– हाइड्रॉलिक, मौसम व जलवायु, प्राकृतिक, जैव–भौतिक सामाजिक, धार्मिक आदि लेकिन सबसे अहम एक महत्वपूर्ण कारण वर्षा की कमी ही है। इसका सर्वाधिक प्रभाव पर्यावरण पर पडता है। जिसमें मानव, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, पेड–पौधें, फसलें सभी प्रभावित होते हैं। मानव जीवन पूर्णतः अस्त व्यस्त हो जाता है तथा पर्यावरण का संरक्षण सम्भव नहीं होता बल्कि विनाश की शुरूआत हो जाती है। कम वर्षा व पर्यावरण के दुष्प्रभाव के कारण मानवीय गतिविधियां अस्त–व्यस्त हो जाती है एवं प्राकृतिक संसाधनों का शोषण भी बुरी तरह होता है। मौसम चक्र का प्रभाव व सूखे की गम्भीरता पशुधन व मानव को सीधे–सीधे अथवा पूर्णरूप से प्रभावित करती है। CAZRI पर किये गये विभिन्न शोधों से पता चलता है कि पश्चिमी राजस्थान में सूखे का पैटर्न सैट है यह उत्तरी पूर्व हिस्से से जून के महीने के दौरान शुरू होकर अगस्त तक दक्षिण पूर्व हिस्से की ओर बढता जाता है। जिसके कारण यहां फसलों की पैदावार नही होती है तथा पशुधन के लिए चारे व पानी की समस्या आ जाती है तथा मानवीय अर्थव्यवस्था खतरे में पड़ जाती है तथा सस्ती दरों पर लोगों को पशुधन को बेचने पर भी मजबूर होना पड़ता है।

भारत एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था वाला देश है। यहां की 72 प्रतिशत के लगभग जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है एवं कृषि प्रधान है। जब वर्षा नहीं होती है या कम होती है तब सूखा व अकाल के परिणाम स्वरूप कृषि व पशु–पालन दोनों व्यवसायों पर संकट की स्थिति पैदा हो जाती है भारत का पश्चिमी राजस्थान मुख्य सूखा व अकाल प्रभावित क्षेत्र है जिसे ''थार रेगिस्तान'' या ''थार का मरूस्थल'' के

* भूगोल व्याख्याता, एस.एस.एस.पी.जी. कॉलेज, जमवारामगढ, जयपुर, राजस्थान।

नाम से जाना जाता है। जोधपुर जिले में CAZRI संस्थान बेहतर जलवायु की निगरानी के लिए वर्षा जल संचयन, जल प्रबन्धन व सूखे की पूर्व चेतावनी के लिए कार्य करते हुए हमेशा पर्यावरण संरक्षण व मरूस्थलीकरण के संरक्षण की वकालत करता है पश्चिमी राजस्थान में वर्ष 1903–05, 1957–60, 1966–71, 1984–87, 1997–2000 में अकाल पडा था। इन वर्षों में यहां की अर्थव्यवस्था तो कमजोर हुई ही थी इसके अलावा प्राकृतिक संसाधानों पर भारी दबाब, मानव व पशुओं पर भोजन, पानी चारा का संकट, भूमिगत जल स्तर का नीचा होना, भूमि की गुणवत्ता में कमी आना, भूमिगत जल में फ्लोराइट व नाइट्रेट जैसे हानिकारक लवणों की अधिकता होना एवं काफी संख्या में मानव व पशुओं की मृत्यु एवं औसत आयु में कमी हुई। अकाल के क्षेत्रों के संबंध में एक काफी मशहूर दोहा भी माना जाता है जिसमें अकाल के प्रदेशों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये ना ऊबरे, मोती मानस चून।।

सूष्टि निर्माण में भी जल सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। प्रकृति की अनूठी धरोहर है। जल का निर्माण मनुष्य नही कर सकता। अर्थात जल की विकट समस्या का निवारण सिर्फ जल संरक्षण ही है। इसलिए जल संकट के निवारण हेतु वर्षा जल संरक्षण मौजूदा समय की महत्वपूर्ण जरूरत है।

पश्चिमी राजस्थान मे ंवर्षा वाले बादलों के संबंध में एक लोकप्रिय कहावत प्रचलित है –

''तीतर मास्या बादला, बिधवा काजल रेख।
या बारसै वा घर करै, या में मीन ना मेष।।

इसका अर्थ है जब आसमान में तीतर के पंख के समान बादल दिखाई दें एवं जब कोई विधवा स्त्री काजल बिन्दी लगाकर मांग भरक सजधज के घर से बाहर जाये तो? बादलों द्वारा निशचित वर्षा होती है तथा यह विधवा स्त्री किसी के साथ शादी के बन्धन में बंधती है। इसमें शास्त्री आचार्य (पंण्डित) ज्योतिषि को पुछने की आवश्यकता नहीं है।

सर्दी के मौसम में होने वाली वर्षा के बारे में भी पश्चिमी राजस्थान में एक मशहूर दोहा प्रचलित है –

''जलवायु भूमध्य का, अद्भुत हमें लखात।
गर्मी मे ंसूखा रहे, सर्दी में बरसात।।

अर्थात पश्चिमी राजस्थान मे ंसर्दी के मौसम में होने वाली बरसात को क्षेत्रीय भाषा में ''मावठ'' कहते है। जो कि भूमध्यसागरीय मानसून (लौटता मानसून, पश्चिमी विक्षोभ) द्वारा होती है। इस भूमध्यसागरीय मानसून द्वारा होने वाली वर्षा की यह विशेषता है कि यह वर्षा सर्दी के मौसम में होती है। गर्मी में मौसम में यह मानसून सूखा एवं निष्क्रिय रहता है।

उद्देश्य

वर्षा को भूगोल वेत्ताओं ने नई दृष्टि से विश्लेषित करना प्रारम्भ किया है वर्षा जल को उचित प्रकार से संग्रहित कर पीने योग्य एवं कृषि के लिए अधिक उपयोगी बनाने तथा इसका अन्य उपयोगों में समुचित विदोहन करने से सम्बन्धित अध्ययन वर्तमान भूगोल अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र बनता जा रहा है।

राजस्थान की भौगोलीक पृष्ठ भूमि शुष्क एवं अर्द्धशुष्क प्रधान हैं। इस प्रकार की भौगोलिक इकाई जहां वर्षा का औसत 25 से 50 सेमी के लगभग हो तथा वर्षा की प्रकृति एवं वितरण में अनियमितता एवं अनिश्चितता अधिक पाई जाने के लिए वर्षा प्रारूप सम्बन्धी वैज्ञानिक शोधों को दृष्टिगत रखकर राजस्थान में विगत 50 वर्षो के वर्षा सम्बन्धी आंकडों का विश्लेषण कर वर्षा प्रारूप की मूल प्रवृतियों को ज्ञात करना एवं अकाल प्रबन्धन की प्रभावी व्यूह नीति बनाने की दृष्टि से इससे सम्बन्धित महत्वर्पूा पक्षों का विश्लेषण करना तथा अकाल के प्रतिकूल प्रभाव को कम करके परिस्थति की सन्तुलन को बनाये रखना ही मूल उद्देश्य है।

निष्कर्ष

राज्य में वर्षा की अनियमितता एवं अनिश्चितता के साथ साथ कालिक रूप से वर्षा के औसत स्तर का कम होने से हर वर्ष प्रदेश का कोई न कोई क्षेत्र अकाल की समस्या से प्रभावित होता है। विगत 27 वर्षों में से 25 वर्षों में अकाल की समस्या रही है तथा वर्ष 2002–03 भीषणतम अकाल का वर्ष रहा है। जिसमें राज्य के 41950 गांवों तथा 4.69 करोड जनसंख्या अकाल की चपेट में आई। इस वर्ष के अकाल व सूखे को ''मैक्रोड्रॉउट'' कहा गया। जिसका प्रभाव राजस्थान में ही नही वरन अन्य राज्यो पर भी पडा। सर्वाधिक औसत अकाल पीड़ित गांव बाडमेर (1804.26) जिले में तथा सबसे कम संख्या सिरोही (167.16) जिले में रहे।

राज्य में जिले वार वर्षा की कालिक स्थिति के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जिलो के बीच पर्याप्त अन्तर पाया जाता है। आपदाप्रबन्धन जिसका अकाल प्रबन्धन एक हिस्सा है उसके बारे मे वैज्ञानिक एवं योजनाबद्ध रूप से सुरक्षा और पुर्नवास पर ध्यान देना चाहिए जिससे आपदा और अकाल पर काबू पाया जा सके। समग्र रूप से अकाल की समस्या के समाधान हेतु दीर्घकालिक सोच के साथ समर्पित भाव व संकल्प से समन्वित दृष्टिकोण द्वारा योजना बनाना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Ayisi, Ruth Ansah. 1992. "Mozambique: Drought and Desperation." *Africa Report* 37, No. 3: 33-35.
2. Callihan, David M., John H. Eriksen, and Allison Butler Herrick. 1994. *Famine Averted: The United States Government Response to the 1991/92 Southern Africa Drought*. Management Systems International, Evaluation Synthesis Report Prepared for USAID/Bureau for Humanitarian Response. Washington, D.C.: Management Systems International.
3. Hendry, Peter. 1988. "Food and Population: Beyond Five Billion." *Population Bulletin* 43, No. 2.
4. Toton, Suzanne C. 1982. *World Hunger: The Responsibility of Christian Education*. Maryknoll, New York: Orbis Books.

❖◆❖